CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.029

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

आपका बंटी - एक विमर्श

धूडाराम
सहायक आचार्य–हिंदी
(विद्या संबल योजना के अंतर्गत)
राजकीय महाविद्यालय देसूरी, जिला–पाली राजस्थान
Email-dhooraram.kolsiya@gmail.com, Mob-9887861248

First draft received: 16.10.2024, Reviewed: 27.10.2024, Final proof received: 15.11.2024, Accepted: 21.11.2024

सार-संक्षेप

मुझे लगा कि बंटी किन्ही दो -एक घरों में नहीं, आज के अनेक परिवारों में सांस ले रहा है-- अलग-अलग संदर्भो में, अलग-अलग परिस्थितियों में; लेकिन एक बात मुझे इन बच्चों में समान लगी और वह यह है कि ये सभी फालतू, गैर जरूरी और अपनी जड़ों से कटे हुए हैं I किसी एक व्यक्ति के साथ घटी हुई घटना,दया, करुणा और भावुकता पैदा कर सकती है, लेकिन जब अनेक जिंदगियां एक जैसे सांचे में ही सामने आने लगती है ; तो दया और भावुकता के स्थान पर मन में धीरे- धीरे एक आतंक उभरने लगता है I मेरे साथ भी यही हुआ Iबंटी के इन अलग-अलग टुकड़ों ने उस समय मुझे करुणा- विगलित और उच्छ्वसित ही किया था, लेकिन जब सब मिलाकर बंटी मेरे सामने खड़ा हुआ, तो मैंने अपने आप को आतंकित ही अधिक पाया I समाज की दिनों दिन बढ़ती हुई एक समस्या के रूप में, जिसका कहीं कोई हल नहीं दिखाई देता.

मुख्य शब्द : *पूंजीवाद, ब्राह्मणवाद, सामाजिक न्याय, श्रमिक कल्याण, सामाजिक सुरक्षा, नवउदारवाद आदि.*

मूल संवेदना

मुझे लगा कि बंटी किन्ही दो -एक घरों में नहीं, आज के अनेक परिवारों में सांस ले रहा है-- अलग-अलग संदर्भो में, अलग-अलग परिस्थितियों में; लेकिन एक बात मुझे इन बच्चों में समान लगी और वह यह है कि ये सभी फालतू, गैर जरूरी और अपनी जड़ों से कटे हुए हैं I किसी एक व्यक्ति के साथ घटी हुई घटना,दया, करुणा और भावुकता पैदा कर सकती है, लेकिन जब अनेक जिंदगियां एक जैसे सांचे में ही सामने आने लगती है ; तो दया और भावुकता के स्थान पर मन में धीरे- धीरे एक आतंक उभरने लगता है I मेरे साथ भी यही हुआ Iबंटी के इन अलग-अलग टुकड़ों ने उस समय मुझे करुणा- विगलित और उच्छ्वसित ही किया था, लेकिन जब सब मिलाकर बंटी मेरे सामने खड़ा हुआ, तो मैंने अपने आप को आतंकित ही अधिक पाया I समाज की दिनों दिन बढ़ती हुई एक समस्या के रूप में, जिसका कहीं कोई हल नहीं दिखाई देता

रूपरेखा

उद्देश्य

भूमिका

आपका बंटी का कथा सूत्र

उपन्यास की कथावस्तु का सार

आपका बंटी एवं बाल विमर्श

सारांश

उद्देश्य

1. बालक बंटी की कथा के माध्यम से बाल मनोविज्ञान को समझ सकेंगे.

2. दांपत्य जीवन में अहं के टकराव जनित दुष्परिणाम जान सकेंगे.

3. तलाक के दुष्परिणामो का बोध हो सकेगा .

भूमिका

उपन्यास गद्य लेखन की एक महत्वपूर्ण साहित्यिक विधा है I उपन्यास में जनजीवन की झाँकी को सहज ही प्रस्तुत किया जा सकता है I साहित्य को यदि जीवन और जगत् की परछाई माना जाए, तो यह भी स्वीकार करना होगा कि जीवन की जितनी वास्तविक और सौंदर्यमय छवि उपन्यास में उभरती है उतनी अन्य किसी साहित्यिक विधा में नहीं उभारी जा सकती है।

आपका बंटी, मन्नू भंडारी द्वारा रचित एक सामाजिक समस्या समस्या प्रधान उपन्यास है Iउपन्यास की कथा के केंद्र में बंटी उर्फ अरूप बत्रा नाम का बालक है; जो चौथी कक्षा में पड़ता है I पारिवारिक उपेक्षा के शिकार बालक बंटी के जीवन की पीड़ा, कुंठा एवं तलाक जनित समस्याओं को प्रस्तुत उपन्यास में उभारा गया है I

आपका बंटी का कथा सूत्र

उस दिन लौटते हुए सचमुच में बंटी कहीं मेरे साथ चला आया I आकर डायरी में मैंने बंटी की पहली जन्म पत्री बनायी I उसी रात बंटी की विभिन्न स्थितियों के न जाने कितने कल्पना चित्र बनते- बिगड़ते रहे । मुझे लगा कि बंटी अपनी नई मां के घर आ गया है। नई मां और पिता के बीच एक बालिका है , लगभग 6 महीने बाद की घटना है। नई मां के घर बच्ची सोफे पर उछल कूद कर रही है---- वहीं बंटी सहमा हुआ कोने में खड़ा है । रात में सोई तो लगा छ: महीने पहले जिस बंटी को अपने साथ लाई थी; वह सिर्फ एक दयनीय मुरझायापन बनकर रह गया है।

5 आपका बंटी उपन्यास का कथा सार

आपका बंटी लेखिका मन्नू भंडारी द्वारा रचित एक सामाजिक समस्या प्रधान उपन्यास है, जिसका पहला संस्करण 1979 ईस्वी में प्रकाशित

हुआ। उपन्यास की कथावस्तु अजय और शकुन के दाम्पत्य जीवन में आई कड़वाहट और विवाह विच्छेद को लेकर तैयार की गई है लेकिन कथा के केंद्र में सात -आठ वर्षीय मासूम बालक बंटी बना रहता है। अजय और शकुन दोनों में ही अक्सर अहं का टकराव रहता है। अजय, शकुन को, शकुन के हर काम को और उसकी हर एक बात को, उसके सोचने और उसके हर रवैया को गलत ही सिद्ध करता रहा। शकुन स्वतंत्र विचारों वाली पढ़ी -लिखी नारी है। वह अपने जीवन को अपनी इच्छा अनुसार जीना चाहती है ;जबकि अजय पर पुरुष प्रधान समाज वाली मानसिकता सवार है।इस कारण दोनों में एक दूसरे के प्रति कटुता एवं दूरी बढ़ती गई। सात साल तक दोनों एक दूसरे को गलत सिद्ध करने, हराने की ही सोचते रहे। मासूम बंटी उन दोनों से बने त्रिकोण में फंस गया।दोनों के अहं के कारण अंततः तलाक तक की नौबत आ जाती है। इसके मूल में अजय और शकुन दोनों ही थे जो उनके वक्तव्य में स्पष्ट झलकता है यथा-

सात वर्षों में विभागाध्यक्ष से प्रिंसिपल हो जाने के पीछे भी कहीं अपने आप को बढ़ाने से ज्यादा अजय को गिराने की आकांक्षा ही थी। वह स्वयं कभी अपना लक्ष्य रही ही नहीं। एक अदृश्य अनजान सी चुनौती थी ;जिसे उसने हर समय अपने सामने हवा में लटकता हुआ महसूस किया।" सच पूछा जाए तो अजय के साथ न रह पाने का दंश नहीं है यह, बल्कि अजय को हरा न पाने की चुभन है यह, जो उसे उठते- बैठने सालती रहती है।"

शकुन कोलकाता छोड़कर एक दूसरे नगर में अपनी पढ़ाई शुरू करती है। अपनी योग्यता के बल पर सात वर्षों में ही वह किसी कॉलेज में विभागायध्यक्ष से प्रिंसिपल के पद पर पहुंचती है। बंटी, शकुन के पास रहता है लेकिन जब कभी पापा की याद आती है, तब वह परेशान भी करता है। शकुन और अजय बंटी के माध्यम से एक दूसरे को परास्त करने का प्रयास करते हैं।अपनी-अपनी महत्वाकांक्षा और कुंठा के कारण अजय और शकुन दोनों ही बंटी को एक साधन की तरह मानते हैं। बंटी को पलंग पर सुला कर शकुन रहती है-" तब एक अजीब सी भावना मन में आई, बंटी केवल उसका बेटा ही नहीं है वरन् एक हथियार भी है, जिससे वह अजय को टॉर्चर कर सकती है, करेगी।"

शकुन बंटी के जरिए अपनी व्यथा को कम करने का प्रयास करती है। वह अपनी मानसिक पीड़ा को भुलाने की व्यर्थ चेष्टा करती रही पर 'मर्ज बढ़ता ही गया ज्यो - ज्यो दवा की' । अजय कोलकाता में ही रहता है । वहाँ वह मीरा से पुनर्विवाह कर लेता है । शकुन को जब अजय के पुनर्विवाह का पता चलता है तब वह सोचती है—"अजय के मुकाबले में विधुर डॉ. जोशी कैसे हैं, वह सोचती है कि अब जोशी या किसी का भी चुनाव उसे करना है, तो जैसे अपने लिए नहीं करना है। अजय को दिखाने के लिए करना है---- फिर मन में कहीं तैर ही गया। अजय को उसे दिखा ही देना है कि अजय एक नई जिंदगी की शुरुआत कर सकता है, तो वह भी कर सकती है।"

शहरी जीवन की छाया शकुन पर पड़ गई थी। वह पति के मौजूद रहते शास्त्र के विरुद्ध जाकर भी पुनर्विवाह करने का सोचती है।वह अपने यौवन को तप की ज्वाला में झोंकने के बजाय किसी और को समर्पित करने की सोचती है ।इसी बीच फुंफी, शकुन को बंटी के भविष्य को लेकर आगाह करती है। वह कहती है जिस घर के लोग लीक छोड़कर चलेंगे उसमें यही सब होगा। अभी क्या हुआ है। अभी तो बहुत कुछ होगा। वकील चाचा से विचार विमर्श के बाद छत्तीस वर्षीय शकुन डॉक्टर जोशी से पुनर्विवाह कर लेती है। बंटी को अब सौतेले बाप के घर रहना पड़ता है। नये घर में बंटी अपने आप को समायोजित नहीं कर पता है । लगता है नये घर में आने के बाद मम्मी पहले जैसी नहीं रही। डॉक्टर जोशी का मम्मी को बार-बार छूना, इत्र की सीसी सूंघना, मम्मी का मिसेज बत्रा से मिसेज जोशी हो जाना, बच्चों द्वारा बंटी को अरूप जोशी कहकर चिढ़ाना, डॉ जोशी को बंटी का पापा कहना; ये सब बंटी के मन में कचोट, नफरत का भाव भर देते हैं। डॉक्टर जोशी के बच्चे अमि, जोत और मम्मी का उनके साथ कार में जाना भी बंटी को अखरता है। तभी तो स्कूल जाने के लिए बस के इंतजार में खड़े मासूम बंटी के चित्त पर डॉक्टर साहब के शब्द तैर जाते हैं - "इस देश में तो तीन भी नहीं दो, बस दो बच्चे पैदा होने चाहिए।" तब वहाँ खड़ा मासूम बंटी सोचता है --- "तीसरा बच्चा, फालतू बच्चा; तीसरा बंटी फालतू बंटी।" बंटी के अजीब व्यवहार से परेशान सुकून भी अब उससे अपना पिंड छुड़ा लेना चाहती है। वह सोचती है बंटी उसके और अजय के बीच सेतु बन न सका, तो वह उसे अपने और डॉक्टर जोशी के बीच में बाधा भी नहीं बनने देगी

स्कूल हो या घर अब बंटी का कहीं भी मन नहीं लगता।तब शकुन उसे अजय के पास भेजने का निर्णय लेती है। बंटी भी पापा के साथ जाने को तैयार हो जाता है।अजय आकर, बंटी को कोलकाता ले जाता है। अब पापा के पास रहकर भी बंटी सौतेली मां मीरा व उनके बच्चों के साथ घुलमिल नहीं पता है। यहां आकर बंटी को लगता है कि—" पापा भी अब पापा नहीं रहे"। शंकु का साथ छोड़कर बंटी पिता के साथ आया तब उसके मन में एक नई उमंग नया जोश था। वह सोच रहा था कि अब उसे पिता के साथ घूमने का पूरा अवसर मिलेगा।अजय उसकी इच्छा के अनुसार खिलौने मिठाइयाँ लाकर देगा। पिता के साथ रहने को लेकर बंटी ने जो सपने संजोए थे; यहां आकर वे भी पूरे नहीं हुए।नये घर में मीरा और उनके बच्चों की उपस्थिति में बंटी का न तो आदर हुआ और न हीं उसे खेलने- कूदने, पिता के साथ घूमने का कभी अवसर ही मिला। कोलकाता में पिता के घर के माहौल को देखकर बंटी के मन का सारा उत्साह शीघ्र ही ठंडा पड़ गया। अब वह गुमसुम रहने लगा। अजय का यह घर बंटी को श्मशान की तरह डरावना लगने लगा। बंटी की आंखों से बहने वाली सरिता का स्रोत भी अब सूख गया था। बंटी को अब मम्मी की बेहद याद सताने लगी। बंटी की मानसिक स्थिति को देखकर बंटी को अब मम्मी की बहुत याद आने लगी। बंटी की मानसिक स्थिति को देखकर अजय उसे हॉस्टल भेजने का निर्णय करते हैं। बेचारा बंटी अब कहीं का नहीं रह जाता है। माता-पिता दोनों के रहते हुए भी वह किसी का भी लाड़- प्यार नहीं पा सका।

'आपका बंटी'- एक विमर्श

स्त्री विमर्श - वृद्ध विमर्श की चर्चा तो साहित्य में सदियों से चली आ रही है; लेकिन बाल विमर्श को साहित्य के केंद्र में लाने का श्रेय महिला कथा लेखिका मन्नू भंडारी को ही जाता है।'आपका बंटी ' बाल विमर्श की दृष्टि से एक ख्याति प्राप्त उपन्यास है।जिसकी कथा के अनुसार अजय और शंकु के तलाक लेने के बाद नौ वर्षीय बालक बंटी निरीह बन जाता है। तलाक के बाद अजय- शकुन तो पुनर्विवाह करके अपनी जिंदगी की नई पारी की शुरुआत कर देते हैं ; लेकिन मासूम बंटी को अपने पास दोनों ही नहीं रखना चाहते।

मानव एक ऐसी अन्योन्याश्रित दुनिया में जीता है, जहां जन्म से लेकर मृत्यु तक उसे किसी न किसी प्रकार के सहारे की जरूरत होती है।जन्म से कुछ वर्षों तक वह माता अथवा धाय के आश्रित रहता है। कुछ बड़ा होने पर, परिवार, समाज,विद्यालय के आश्रित रहकर अपने व्यक्तित्व को आकार देता है। युवा अवस्था में वह कुछ वर्षों के लिए स्वावलंबी होने का दम्भ भर सकता है, बुढ़ापे में वह पुनः परिवार पर आश्रित हो जाता है। ऐसी स्थिति में देखा जाए तो परिवार ही वह मजबूत धूरा है, केंद्र बिंदु है जिसके सहारे खूंटे से बंधे बछड़े की तरह है मनुष्य जिंदगी भर उछल कूद करता रहता है। अंत में परिवार के सदस्यों के हाथों ही उसकी गति होती है।

यहां एक प्रश्न विचारणीय हैकि यदि परिवार का साथ न रहे तो मनुष्य का जीवन कैसा होगा ? परिवार से कटकर जीवन जीने वालों या परिवार द्वारा बेदखाल कर दिए जाने वाले व्यक्तियों का जीवन कैसा होता होगा ? ऐसे व्यक्तियों की समाज के प्रति क्या प्रतिक्रिया होगी ?बालकों के चित्त में यदि कुंठा,अवसाद के भाव भर जाएं तो उनका व्यवहार कैसा होगा ? इसी एक महत्वपूर्ण प्रश्न को बंटी के जरिए महादेवी वर्मा ने आपका बंटी उपन्यास में उठाया है ; ताकि समाज का प्रबुद्ध वर्ग समाज में बढ़ती जा रही तलाक जनित सामाजिक समस्याओं पर विचार कर सके | इस समस्या का कोई हल निकालना का प्रयास करे ताकि बंटी जैसे निरीह बालको को कुंठा एवं अवसाद ग्रस्त होने से बचाया जा सके।

मनुष्य जब जन्म लेता है तब उसकी मूल प्रवृत्तियां पाशविक ही होती हैं। बच्चा जैसे-जैसे बड़ा होता है, माता-पिता, घर, परिवार के सदस्य क्रमशः उसकी पाशविक प्रवृत्तियों में बदलाव लाते हैं । बच्चा जब समझने लगता है, तब उसके मानस पटल पर सबसे ज्यादा असर माता-पिता, घर, परिवार के सदस्यों के व्यवहार का होता है।बच्चे जैसा देखते हैं वैसा ही करते हैं। बच्चों के बनने , बिगड़ने में माता-पिता एवं परिवार का माहौल सर्वाधिक योग देता है। आमतौर पर देखा गया है कि जिन बच्चों के परिवार में हिंसक माहौल होता है। जिन बच्चों की घर में पिटाई होती है, वे बच्चे विद्यालय में अपनी कक्षा के बच्चों के साथ झगड़ते हैं । उनके साथ मारपीट करते हैं। विद्यालय जाकर वहां का भी माहौल खराब करते हैं । घर- परिवार से उपेक्षित ये बच्चे रचनात्मक कार्यों से दूर रहते हैं । तोड़फोड़,हिंसक प्रवृत्तियां उनके चित्त में बैठ जाती हैं । समाज में कोई भी इन्हें गले नहीं लगाना चाहता। आगे चलकर इस तरह की विकृत मानसिकता वाले बच्चे स्वस्थ समाज के लिए समस्या बन सकते हैं।

'आपका बंटी' उपन्यास में मन्नू भंडारी ने बंटी को माध्यम बनाकर बालकों के उपेक्षा भरे जीवन की दर्दनाक कहानी को ही स्वर दिया है । प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने तलाक के बाद उभरती एक नई समस्या को उठाया है । अजय -शकुन का एक दूसरे के प्रति प्रेम और विश्वास खत्म हो जाता है। दोनों के अहं की टकराहट से उनका वैवाहिक जीवन असफल हो जाता है; तब वे एक दूसरे से रिश्ता तोड़ कर तलाक ले लेते हैं ।तलाक के बाद अजय-शकुन दोनों ही पुनर्विवाह कर सुखमय जीवन जीने लगते हैं; लेकिन अब बंटी को दोनों ही अपने पास नहीं रखना चाहते हैं।

आलोच्य उपन्यास का पात्र बंटी माता-पिता दोनों के नए घर में अपनी जगह ढूंढता है। डॉक्टर जोशी के घर में रहते समय तो बंटी के सामने अपनी पहचान का ही संकट खड़ा हो जाता है; जब शकुन, डॉक्टर जोशी को पापा कहने के लिए कहती है। मासूम बंटी डॉक्टर जोशी को पापा कैसे कह सकता है ? क्योंकि उसके पापा तो कोलकाता में रहते हैं । कोलकाता जाकर भी बंटी पापा के नए घर में अपने आपको समायोजित नहीं कर पाता है । यहां भी नयी मां का व्यवहार बंटी को रास नहीं आया। यहां आकर भी बंटी अपने आप को अवांछित,फालतू समझ कर हर वक्त उदास एवं दु:खी ही रहने लगता है।

'आपका बंटी' उपन्यास में विघटित होते एकल परिवार की एक संवेदनशील समस्या को उठाया है ।एकल परिवार में पति-पत्नी के तलाक या विवाह-विच्छेद से बच्चों की स्थिति चिंताजनक हो जाती है । बदली हुई स्थितियों में बंटी के लिए न तो मम्मी के घर कोई जगह है और न ही पापा के घर उसके लिए कोई जगह बची है । उपन्यास की कथा के अनुसार अंत में अजय बंटी को छात्रावास में दाखिला दिलाने अपने साथ लेकर जा रहा है ; तब रास्ते में बंटी कोई स्वप्न सा देखता है। सपने में कोई उससे पूछ रहा है कि वह कौन है? कहां से आया है ? लेकिन बंटी उत्तर देने में असमर्थ है।यह उसके अंतर मन की ही अभिव्यक्ति है।

कथा लेखिका मन्नू भंडारी यहां संकेत कर देना चाहती है कि शकुन, अजय जैसे माता-पिता और उनके परिवार जैसे माहौल में पलने वाले,बड़े होने वाले हजारों बच्चे हमारे आसपास मिल जाएंगे। बच्चों की इस तरह की मानसिकता के पीछे कौन जिम्मेदार है? क्या ऐसे बच्चों के भविष्य के लिए समाज या आज की सरकारों के पास कोई ठोस योजना है? क्या तलाक जैसी सामाजिक समस्या का कोई हल निकाला जा सकता है ? ऐसे ही कुछ विचारणीय प्रश्न है; जिन्हें मन्नू भंडारी ने समाज के प्रबुद्ध वर्ग, समाज सुधारको, सुधि पाठकों के समक्ष बंटी की कथा के जरिए उभारे हैं।

सारांश

सारांश रूप में कहा जा सकता है कि आपका बंटी बाल विमर्श की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण उपन्यास है ।इस उपन्यास में शकुन के माध्यम से कथा लेखिका ने यह उद्घाटित किया है कि आधुनिक काल की नारी पढ़-लिखकर स्वावलंबी बनाना चाहती है ।उसे अपने निर्णय लेने में पुरुष का दखल स्वीकार नहीं होता। दूसरी तरफ हमारा पुरुष प्रधान समाज पुरानी मानसिकता को छोड़ना नहीं चाहता। परिवार से जुड़े महत्वपूर्ण निर्णय वह खुद लेना चाहता है। ऐसी स्थिति में शिक्षित समाज के सुखचैन में गिरावट आई है ।अहं भावना एवं पति-पत्नी का एक दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश के चलते वैवाहिक रिश्ते टूटने लगे हैं । पति-पत्नी द्वारा एक दूसरे की भावनाओं की कद्र नहीं करने के कारण तलाक तक की नौबत तक आ जाती है। तलाक के कारण बंटी जैसे बेगुनाह है बच्चों का जीवन नारकीय हो जाता है। ऐसे बच्चे न केवल मां-बाप बल्कि समाज की अपेक्षा के शिकार हो जाते हैं ।मां-बाप के लाड -प्यार,दुलार से वंचितये बच्चे विकृत मानसिकता वाले बन जाते हैं। लेखिका मन्नू भंडारी ने बालक बंटी को उपन्यास की कथा के केंद्र में रखकर तलाक जनित बाल समस्या को स्वर दिया है।

संदर्भ सूची

1 आपका बंटी- मन्नू भंडारी, 28 वाँ संस्करण: 2019
प्रकाशन- राधाकृष्णन प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, जी-17,
जगतपुरी, दिल्ली-110051,पृष्ठ संख्या-05,06,28,29,35,82
2. अकेली स्त्री, लेखक- ठाकुर श्रीनाथ सिंह, हिंदी साहित्य ग्रंथावली प्रयाग, पृष्ठ संख्या 84,87,95
3. अनाथ बालक, लेखक- पंडित कात्यायनी दत्त त्रिवेदी
इंडियन प्रेस लिमिटेड – प्रयाग, पृष्ठ संख्या-83,86
4. बदलते समाज, लेखक- सतीस 'जूहि'
प्रकाशन- कलम घर प्रकाशन,जोधपुर, पृष्ठ संख्या-92,93